1. वैदिक संहिता

- 'श्रुति' किसे कहते हैं - वेद को
- वेदः कः - अपौरुषेयं वाक्यम्
- वेदों की संख्या है - चार
- वेदों को किसने विभाजित किया है - कृष्णद्वैपायन (व्यास)
- वर्ण व्यवस्था का प्रथम उल्लेख होता है - ऋग्वेद में
- 'श्रुति' शब्दः कस्यार्थस्य बोधकोऽस्ति - वेदस्य
- 'वेदा अपौरुषेयाः' इति स्वीकुर्वन्ति - मीमांसकाः
- मीमांसा की दृष्टि से वेद के प्रकार हैं - पाँच, विधि-मन्त्र-नामधेय निषेध-अर्थवाद

- 'श्रुतिः' पद का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है - शृणोति धर्मं यः
- इतिहासपुराणाभ्यां ..... समुपबृंहयेत् - वेदम्
- अपौरुषेयाः वेदाः भवन्ति - नित्याः
- वेद इन्हें कहते हैं - मन्त्र-ब्राह्मण को
- मन्त्राणां समुदायस्य किं नाम अस्ति - संहिता
- वेदों के काव्यात्मक हिस्से को कहा जाता है - संहिता
- संहितापाठानन्तरं क्रियते - पदपाठः
- 'वेदत्रयी' समूह क्या है - ऋग्वेद, यजुर्वेद,सामवेद
- 'त्रयी' इति संज्ञा - वेदस्य
- अपौरुषेयग्रन्थः को विद्यते - वेदः
- वेदारम्भः कुतः प्रारभ्यते - संहितातः
- सायणमते वेदस्य स्वरूपं किम् - 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारस्य अलौकिकोपायभूतं ज्ञान-

- आर्षेयपरम्परा के अनुसार वेद हैं - अपौरुषेयः
- वेदः कोऽस्ति - अपौरुषेयः

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

वेदस्य स्वतः प्रामाण्यत्वे किं मानम्	- ईश्वरप्रोक्तम्
'वेदत्रयी' में किसकी गणना नहीं होती है	- अथर्ववेद की
वेदशब्दस्य निष्पत्तौ का निष्पत्तिः समीचीना नास्ति	- विद्‌निवारणे
कः कथ्यते वेदनिन्दकः	- नास्तिकः
धर्म का मूल प्रमाण है	- वेद (श्रुति)
धर्म का मूल स्रोत है	- वेद
'वेदेन प्रयोजनमुद्दिश्यविधीयमानोऽर्थः धर्मः'	
एतल्लक्षणं केन कृतम्	- आपदेवेन
आद्युदात्तः वेदशब्दः कस्य वाचकः	- ग्रन्थवाचकः
अन्त्योदात्तः वेदशब्दः कस्य वाचकः	- कुशमुष्टिवाचकः
'ऋक्-प्रातिशाख्य' सम्बन्धित है	- ऋग्वेद से
ऋग्वेदीयः ऋत्विक्	- होता
'होता' कस्य वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति	- ऋग्वेदस्य
छन्दोबद्धः वेदोऽस्ति	- ऋग्वेदः
सबसे पुराना वेद कौन सा है	- ऋग्वेद
पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार प्राचीनतम वेद कौन है	- ऋग्वेद
ऋग्वेद का दूसरा नाम है	- दशतयी
आयुर्वेदः कस्य वेदस्योपवेदः	- ऋग्वेदस्य
होतुः सम्बद्धः वेदः कः	- ऋग्वेदः
मण्डलक्रमः केन वेदेन सम्बद्धः	- ऋग्वेदेन
ऋग्वेद की सृष्टि किससे हुयी है	- अग्नि से
ऋग्वेदः सम्प्राप्तः	- अग्नि से
ऋग्वेद का प्रथमसूक्त है	- अग्निसूक्त
ऋग्वेदे प्रथममण्डलस्य प्रथमसूक्तं किम्	- अग्निसूक्त
ऋग्वेद में सूक्तों की संख्या	- 1028
पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की शाखाओं की संख्या है	- एकविंशतिः
सिद्ध ऋग्वेद सम्बद्ध है	- शाकलशाखा से
'शाकलसंहिता' किस वेद की है	- ऋग्वेद
'बाष्कलसंहिता' वर्तते	- ऋग्वेदस्य
बाण्डूकायनशाखा से सम्बन्धित है	- ऋग्वेद
ऋग्वेद के दशम मण्डल में कितने सूक्त हैं	- 191
ऋग्वेद की मूल लिपि थी	- ब्राह्मी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

- स्कन्दस्वामी का भाष्य किससे सम्बद्ध है - ऋग्वेद से
- ऋग्वेदस्य शाखाः सन्ति - 5 (पाँच)
- ऋग्वेद के पदपाठकार हैं - शाकल्य
- वंशीयमण्डलानि उपलभ्यन्ते - ऋग्वेदे
- दानस्तुतिसूक्तानि संहितायां सन्ति - ऋग्वेद-संहिता
- पुरुषसूक्त का सम्बन्ध है - ऋग्वेद से
- पुरुषसूक्त ऋग्वेद के किस मण्डल में है - दशममण्डल में
- ऋग्वेदे स्वरितस्वरः प्रदर्श्यते - उपरिष्यत्
- शाकलशाखा से सम्बद्ध वेद है - ऋग्वेद
- ऋग्वेद में मन्त्रों की संज्ञा है - ऋचा
- आयुर्वेद किस वेद का उपवेद है - ऋग्वेद
- पुरूरवा-उर्वशी संवाद किस वेद में है - ऋग्वेद में
- ऋग्वेद में 'पारिवारिक-मण्डल' कहे गये हैं - दो से सात
- 'समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः' किस वेद का अन्तिम मन्त्र है - ऋग्वेद का
- 'ऋक्'-शब्दस्यार्थः भवति - स्तुतिः
- "पावका नः सरस्वती" इति मन्त्रः वर्तते - तृतीयसूक्तस्य
- प्रसिद्ध गायत्रीमन्त्र किस धर्म-ग्रन्थ में हैं - ऋग्वेद
- किसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है - सामवेद का
- ऋग्वैदिककाल के प्रारम्भ में निम्न में से किसे महत्त्वपूर्ण मूल्यवान् सम्पत्ति समझा जाता था - गाय को
- ऋग्वेद संहिता का नवम मण्डल पूर्णतः किसको समर्पित है - सोम और इस पेय पर नामांकित देवता को
- ऋग्वेद का कौन सा मण्डल पूर्णतः 'सोम' को समर्पित है - 9वाँ मण्डल
- ऋग्वेद के किस मण्डल में 'बालखिल्य सूक्त' है - अष्टम मण्डल में
- बालखिल्यसूक्तानि विद्यन्ते - ऋग्वेदे
- ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्त कितने हैं - ग्यारह
- ऋग्वेद का कौन-सा मण्डल सबसे अर्वाचीन है - दशम मण्डल
- अवेस्ता की तुलना किस वेद से की जाती है - ऋग्वेद से
- सामगान का जिस वेद पर गायन किया जाता है, वह वेद है - ऋग्वेद
- प्रसिद्ध 'शुनःशेपाख्यान' जिसमें मिलता है, वह वेद है - ऋग्वेद

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सामवेद के मन्त्र सबसे अधिक किस वेद से लिये गये हैं - ऋग्वेद से
ऋग्वेदेऽग्निसूक्तेऽग्निरुच्यते - पुरोहितः
'ऋक्'-शब्दस्य दार्शनिकः अर्थः कः - ब्रह्म
यागे शस्त्रं केन पठ्यते - होत्रा
कः ऋग्वेदस्य मन्त्रैः देवानामाह्वानं करोति - होता
ऋग्वेद की रचना कहाँ हुयी थी - सप्तसैन्धव प्रदेश में
ऋग्वेदस्य कस्य मण्डलस्य नाम पवमानमण्डलम् अस्ति - नवमस्य
कः वेदः अभ्यर्हितः - ऋक्
'अस्यवामीयसूक्त' मिलता है - ऋग्वेद में
ऋग्वेदस्य मुख्यविषयः अस्ति - उपासना
वर्णव्यवस्था का सर्वप्रथम विवरण कहाँ प्राप्त होता है - ऋग्वेद के अन्तिम मण्डल (पुरुषसूक्त) में
चारों वर्णों का प्रथमबार उल्लेख किस वेद में किया गया है - ऋग्वेद के अन्तिम मण्डल (पुरुषसूक्त) में
ऋग्वेदकाल में जनता निम्न में से मुख्यतया किसमें विश्वास करती थी - बलि एवं कर्मकाण्ड में
ऋग्वेद में वर्णित धर्म का आधार था - प्रकृति-पूजा
वेद में वर्णित सबसे सामान्य अपराध निम्नलिखित में से क्या था - पशुओं की चोरी
'होतृगणे' कति ऋत्विजः भवन्ति - चत्वारः
आर्य-अनार्य युद्ध का वर्णन मिलता है - ऋग्वेद में
स्तुतिप्रधान वेद है - ऋग्वेद
ऋग्वेद के किस मण्डल में सोमयज्ञ के मन्त्र उपलब्ध होते हैं - नवम मण्डल में
'आश्वलायन श्रौतसूत्र' से सम्बन्धित वेद है - ऋग्वेद
'Langlois' ने ऋग्वेद का जिस भाषा में अनुवाद किया है वह है - French (फ्रेंच)
'अग्निमीळे पुरोहितम्' इति मन्त्रांशं कस्य वेदस्यास्ति - ऋग्वेदस्य
यम-यमी-संवादसूक्त किस वेद में है - ऋग्वेद में
यम-यमी-संवादे 'यमी' आसीत् यमस्य - भगिनी
"किं भ्रातासद्यनाथम्" इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते - यम-यमी-संवादसूक्ते
विश्वामित्र-नदी-संवाद किसमें मिलता है - ऋग्वेद में
'सरमा-पणि-संवाद' किस वेद में मिलता है - ऋग्वेद में

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

- 'पुरूरवा-उर्वशी' संवादसूक्त ऋग्वेद के किस मण्डल में है - दशम मण्डल में
- 'नासदीयसूक्त' है - ऋग्वेद में
- 'यम-यमी-संवाद' ऋग्वेद के किस मण्डल में है - दशम मण्डल में
- "न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति" इति वर्तते - पुरूरवा-उर्वशी-संवादे
- "भा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते" वर्तते - विश्वामित्र-नदी-संवादे
- "नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्" इति मन्त्रपादः कुत्र विराजते - सरमा-पणि-संवादे
- 'यमी' प्रतीक है - रात्रि की
- 'विपाशा शुतुद्री' इति नाम्नोः नद्योः वर्णनं कस्मिन् संवादसूक्ते विद्यते - विश्वामित्र-नदी-सूक्ते
- विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त में ऋषिका नदियाँ कौन है - विपाट्छुतुद्री
- "एना वयं पयसा पिन्वमाना अनुयोनिं देवकृतं चरन्तीः" इति ऋचायाः केन संवाद-सूक्तेन सम्बन्धः - विश्वामित्र-नदी-सूक्तेन
- "आ घा ता गच्छा" इति पठ्यते - यम-यमी-संवादे
- "तस्य वयं प्रसवे याम् उर्वीः" मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते - विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य
- ऋग्वेद के किस मण्डल में विश्वामित्र-नदी-संवाद सूक्त है - तृतीय मण्डल में
- 'इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः' से सम्बन्धित सूक्त है - विश्वामित्र-नदी-संवाद
- 'सरमा-पणि' संवादसूक्तस्य मण्डलक्रमः कः - 10/108
- "कदा सूनुः पितरं जात इच्छात्" मन्त्रांशोऽयं वर्तते - पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते
- 'आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्" मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य वर्तते - विश्वामित्र-नदी-सूक्तस्य
- 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' इयमुक्तिर्भवति - उर्वश्याः
- सृष्ट्युत्पत्तिविषयकं विवेचनं वर्तते - नासदीयसूक्ते
- ऋग्वेद के किन दो मण्डलों में सूक्तों की संख्या समान है - प्रथम और दशम
- "पयसा जवेते" से सम्बन्धित सूक्त है - विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्त
- "स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा, अप ते गवां सुभगे भजाम" इति मन्त्रांशः कुतः उद्धृतः - सरमा-पणि-संवादात्
- वेदानुसारेण "चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सूर्यो अजायत'' इयं पंक्तिः अस्ति - पुरुषसूक्तस्य
- 'नासदीयसूक्त' का सम्बन्ध है - ऋग्वेद से
- 'स देवाँ एह वक्षति' इति कस्मिन् सूक्ते उपलभ्यते - अग्निसूक्ते
- कस्मिन् सूक्ते चतुर्णां वर्णानामुल्लेखोऽस्ति - पुरुषसूक्ते
- 'आ कृष्णेन रजसा' इति कस्मिन् सूक्ते पठ्यते - सवितृसूक्ते
- 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु' से सम्बन्धित सूक्त है - शिवसङ्कल्पसूक्त
- ऋक्सामच्छन्दोयजूंषि कस्मात् समुत्पन्नानि - पुरुषविशेषात्
- 'सृष्टि-स्थिति-प्रलय' विषयकं विवेचनम् उपलभ्यते - नासदीयसूक्ते
- ''संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते - पृथिवीसूक्ते
- 'अग्निमीळे पुरोहितम्' इत्यस्मिन् मन्त्रे 'इळे' पदस्य अर्थः अस्ति - स्तौमि
- विराट्पुरुषस्य कस्मादङ्गात् वैश्यो जातः - ऊरुतः
- ब्राह्मण की उत्पति ब्रह्मा के किस अङ्ग से हुयी है - मुख
- ब्रह्मा के ऊरु से किसकी उत्पत्ति हुयी है - वैश्य
- सबसे पहले किसकी सृष्टि हुयी - जल
- पुरुषसूक्त में हमें मिलता है - चातुर्वर्ण्य का सिद्धान्त
- जल से उत्पत्ति का सिद्धान्त किस सूक्त में है - नासदीयसूक्त में
- 'नासत्या वृक्तबर्हिषा' यह किस सूक्त में है - अश्विनौसूक्त
- 'रोहितसूक्त' किस वेद में उपलब्ध होता है - अथर्ववेद में
- 'यो जात एव प्रथमो मनस्वान्' यह मन्त्रांश किस सूक्त का है - इन्द्रसूक्त का
- 'स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव' इति मन्त्रांशः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते - अग्निसूक्ते
- संज्ञानसूक्तं कस्मिन् मण्डले प्राप्यते - 10 (दसवें)
- ''देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती'' इति मन्त्रांशः कस्य सूक्तस्य - उषस्-सूक्तस्य
- नासदीयसूक्तस्य प्रतिपाद्यं किम् - सृष्टिः
- ''मध्या कर्तोर्विततं सञ्जभार'' इति पठ्यते - सूर्यसूक्ते
- ''पर्जन्यः पिता'' इति कस्मिन् सूक्ते प्रतिपाद्यते - पृथिवीसूक्ते
- ''श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त'' मन्त्रांशोऽयं वर्तते- पुरूरवा-उर्वशी-सूक्ते
- सृष्ट्युत्पत्तिविषयं विवेचनं वर्तते - पुरुषसूक्ते
- ''अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्''

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

मन्त्रांशोऽयं वर्तते - पृथिवीसूक्ते
- 'वाक्सूक्तम्' ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले विद्यते - दशमे
- 'मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति' किस सूक्त में प्राप्त होता है – - वाक्सूक्त में
- ऋग्वेद में कौन दार्शनिक सूक्त है - पुरुषसूक्त
- 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्' यह किस सूक्त में उपनिबद्ध है - पुरुषसूक्त में
- रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त अंश क्या है– 'स्वस्ति नो.....' - बृहस्पतिर्दधातु
- 'स जातो अत्यरिच्यत' में 'सः' पद का अर्थ - पुरुष
- किस सूक्त को सर्वेश्वरवाद का मूल माना जाता है – पुरुष
- नासदीयसूक्तम् अस्ति - दार्शनिक-सूक्त
- "वृषायमाणोऽवृणीत सोमम्" से सम्बन्धित सूक्त है - इन्द्र
- 'को अद्धा वेद क इह प्र वोचत' इत्यादयः प्रश्नाः कस्मिन् सूक्ते लभ्यते - नासदीयसूक्ते
- कस्मिन् सूक्ते सृष्टिप्रक्रिया वर्णितास्ति - पुरुषसूक्ते
- मन्त्राः कस्मात् - मननात्
- अक्षसूक्तं कस्मिन् मण्डले प्राप्यते - दशममण्डले
- "हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्" अस्मिन् मन्त्रे 'हिरण्यगर्भः' इति पदस्य कः अर्थः - हिरण्यगर्भः प्रजापतिः
- 'कृषिमित्कृषस्व' किस सूक्त का है - अक्षसूक्त
- 'भूमिसूक्त' (पृथिवीसूक्त) किस वेद में है - अथर्ववेद में
- "सह वामेन" से सम्बद्ध सूक्त है - उषासूक्त
- 'एतावानस्य महिमा' से सम्बन्धित सूक्त है - पुरुषसूक्त
- ऋग्वेदस्य (1.154) सूक्ते विष्णुदेवाय मन्त्राणां संख्या अस्ति– - 6 (छह)
- '..... समवर्तताग्रे' मन्त्रस्य रिक्तांशे प्रयोज्यमस्ति - हिरण्यगर्भः
- 'यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।' मन्त्रांशोऽयं केन सूक्तेन सम्बद्धः – पृथिवीसूक्तेन
- अग्नि की कितने सूक्तों में स्तुति की गयी है - 200
- ऋग्वेद के कितने सूक्तों में बृहस्पति देवता की स्वतन्त्र रूप में उपासना की गयी है - 11 सूक्तों में
- 'विश्वामित्र-नदी-संवादो' वर्तते - ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

- शाकलशाखा अस्ति - ऋग्वेदस्य
- शांखायनशाखा कस्य वेदस्य - ऋग्वेदस्य
- शांखायन-गृह्यसूत्रस्य सम्बन्धः अस्ति - ऋग्वेदीयबाष्कलशाखातः
- ऋग्वेद में मण्डलों की संख्या है - दश (10)
- किस वेद का अष्टक और मण्डल दो प्रकार का विभाजन है - ऋग्वेद
- 'पुरुषसूक्त' ऋग्वेद के किस मण्डल में आता है - दशम
- ऋग्वेद में कितने अष्टक हैं - आठ (8)
- ऋग्वेदे कति मन्त्राः सन्ति - 10552
- खिलसूक्तैः सह ऋग्वेदे कति सूक्तानि सन्ति - 1028
- वेद विकृतियाँ हैं - 8 (आठ) क्रम
- ऋग्वेद का विभाजन क्रम है - मण्डल और अष्टक क्रम
- ऋग्वेदस्य प्रत्येकम् अष्टकेषु कति अध्यायाः भवन्ति - अष्ट
- ऋग्वेद के अक्षसूक्त में कितने मन्त्र हैं - चतुर्दश
- वेदाध्ययने विकृतिपाठः कतिविधो विद्यते - अष्टविधः
- अष्टकक्रमे ऋग्वेदे कति अध्यायाः सन्ति - 64
- 'ऋग्वेदीयपुरुषसूक्ते' कति मन्त्राः सन्ति - षोडश
- 'नासदीयसूक्ते' कति मन्त्राः सन्ति - सप्त
- 'अष्टकक्रम' में विभक्त ग्रन्थ है - ऋग्वेद
- ऋग्वेद के प्रथमसूक्त में मन्त्रों की संख्या है - 9 (नव)
- ऋग्वेद की सूक्तव्यवस्था किसके अनुसार है - मण्डल
- किस वेद का विभाजन अष्टकों में किया गया है - ऋग्वेद
- 'दाशुषे' का अर्थ है - हविर्दाता यजमान के लिए
- 'रोदसी' का क्या अर्थ है - द्यावापृथिवी

- 'मृगो न भीमः' मे 'न' पद का क्या अर्थ है - इव
- 'कर्मण्यपसो मनीषिणः' में 'अपसः' का क्या अर्थ है - कर्मनिष्ठ
- 'रायः' शब्दस्य कोऽर्थः - धन
- 'मेदिनी' किसे कहते हैं - पृथ्वी
- ऋग्वैदिकसूक्तविशेषे 'दोषावस्तर्' इति पदस्य कोऽर्थः - रात्रिन्दिवा
- यास्कमते 'वृत्रम्' कस्य प्रतीकः अस्ति - मेघः
- 'क्रतुः' इत्यस्य कोऽर्थः - यज्ञः
- शुल्बशब्दस्य कोऽर्थः - रज्जुः
- 'देवासः' इति प्रयोगः - छान्दसः

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

- 'सान्नाय्य' शब्द का अर्थ है — दधिपयसी
- 'ग्मा' जिसका पर्यायवाची शब्द है, वह है — पृथ्वी
- गद्यात्मक वेद है — यजुर्वेद
- जिस वेद की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गयी है उसका नाम है — यजुर्वेद
- यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है — कर्मकाण्ड
- कः वेदः 'अध्वर्युवेद' नाम्नाऽपि ज्ञायते — यजुर्वेदस्य
- वेदव्यासः यजुर्वेदस्य ज्ञानं कस्मै दत्तवान् — वैशम्पायनाय
- 'यजुर्वेदः' सम्प्राप्तः — वायोः
- 'धनुर्वेदः कस्य वेदस्योपवेदः — यजुर्वेदस्य
- पतञ्जलि के अनुसार यजुर्वेद की कितनी शाखायें है — एक सौ (100)
- कः यजुषां वमनं कृतवानासीत् — याज्ञवल्क्यः
- कः यज्ञस्य नेता — अध्वर्युः
- यजुर्वेदः केषां योनिः — क्षत्रियाणाम्
- ब्रह्मा वायोः सकाशात् किं प्रकाशितवान् — यजुर्वेदम्
- अध्वर्यु किस वेद का पुरोहित है — यजुर्वेद का
- 'अध्वर'-शब्दस्यार्थो भवति — यज्ञः
- यजुर्वेदाध्यायी भवति — अध्वर्युः
- यजुर्वेदीयः ऋत्विक् — अध्वर्युः
- आध्वर्यकर्मणः कृते कः वेदः भवति — यजुर्वेदः
- अध्वर्युः कस्य वेदस्य प्रातिनिध्यं करोति — यजुर्वेदस्य
- अध्वर्यु से युक्त वेद है — यजुर्वेद
- श्रौतयागेषु भित्तिस्थानीयो वेदः को विद्यते — यजुर्वेदः
- यजुर्मन्त्रः कीदृशो भवति — गद्यात्मकः
- शुक्लत्वकृष्णत्वभेदः कस्य वेदस्य विद्यते — यजुर्वेदस्य
- यजुर्वेदे यजुषां संग्रहः किमर्थम् अस्ति — अध्वर्युत्वम्
- "देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्" इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे अस्ति — यजुर्वेदे
- कः वेदः अनियताक्षरावसानात्मको भवति — यजुर्वेदः
- सायणाचार्यः प्रथमतया कस्य वेदस्य व्याख्यां कृतवान् — यजुर्वेदस्य
- 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' शुक्लयजुर्वेदस्य कस्मिन् अध्याये प्राप्यते — चत्वारिंशे
- माध्यन्दिनसंहितायाः अपरं नाम किमस्ति — वाजसनेयिसंहिता
- शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित है — शतपथब्राह्मण

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

- 'वाजसनेयी-संहिता' नाम है - शुक्लयजुर्वेद का
- 'परमाचटिक' शाखीय वेद है — - शुक्लयजुर्वेद
- माध्यन्दिनसंहितायाम् अनुदात्तस्वरचिह्नं कुत्र दीयते - अधः
- 'माध्यन्दिनम्' शाखा कस्य वेदस्य - यजुर्वेदस्य
- ईशावास्योपनिषद् किस संहिता से सम्बद्ध है — - काण्वसंहिता से
- याज्ञवल्क्य का सम्बन्ध किस वेद से है - शुक्लयजुर्वेद से
- शुक्लयजुर्वेदस्य शाखा अस्ति - माध्यन्दिन
- माध्यन्दिनशाखा से सम्बद्ध वेद है - शुक्लयजुर्वेद
- 'ईशोपनिषद्' कस्य वेदस्यान्तिमोऽध्यायः - यजुर्वेदस्य
- शुक्लयजुर्वेद की शाखा है - काण्व शाखा
- कस्मिन् वेदे मन्त्रैः सह विनियोगवाक्यानां संग्रहो नास्ति - शुक्लयजुर्वेदे
- वाजसनेयिसंहिता कस्य वेदस्य संहिताऽस्ति. - शुक्लयजुर्वेदस्य
- माध्यन्दिनशाखा मुख्यतः कुत्र उपलभ्यते — - उत्तरभारते
- महीधरभाष्य से सम्बन्धित वेद है - शुक्लयजुर्वेद
- कात्यायनश्रौतसूत्र किस वेद से सम्बद्ध है - शुक्लयजुर्वेद से
- 'शिवसङ्कल्पसूक्त' किस वेद से सम्बन्धित है - शुक्लयजुर्वेद से
- पितृयज्ञस्य वर्णनं वाजसनेयि-संहितायाः कस्मिन् अध्याये प्राप्यते — - द्वितीये अध्याये
- वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये अग्निहोत्रस्य वर्णनमस्ति — - तृतीये अध्याये
- हस्तेन त्रैस्वर्यं प्रदर्श्यत — - माध्यन्दिनसंहितायाम्
- हस्तस्वर होता है - शुक्लयजुर्वेदे
- शुक्लयजुर्वेद किस नाम से भी जाना जाता है - वाजसनेयिसंहिता
- वाजसनेयिसंहितायाः कस्मिन् अध्याये शिवसङ्कल्पोपनिषद् अस्ति - चतुस्त्रिंशे अध्याये
- आदित्यसम्प्रदायस्य प्रातिनिध्यं कः करोति - शुक्लयजुर्वेदः
- काण्वसंहिता किस वेद से सम्बन्धित है - शुक्लयजुर्वेद से
- काण्वशाखायाः प्रचारः विशेषतया कस्मिन् प्रदेशे वर्तते — - महाराष्ट्रे
- वाजसनेयिसंहितायाः प्रथमाध्याये कस्य यज्ञस्य वर्णनमस्ति — - दर्शपौर्णमासस्य
- यजुर्वेद की मुख्यतया कितनी शाखायें हैं - दो
- यजुर्वेदेन सम्बद्धे वेदाङ्गज्योतिषे कति श्लोकाः सन्ति — - चतुःचत्वारिंशत्
- ब्रह्मगणे कति ऋत्विजो भवन्ति — - चत्वारः

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

- यजुर्वेदस्य आहत्य कति शाखाः स्वीक्रियन्ते - 86
- यजुर्वेदस्य मैत्रायणीशाखायां कति काण्डानि सन्ति - चत्वारः
- शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहितायां मन्त्रसंख्या वर्तते - 1975
- शिवसङ्कल्पसूक्तं कस्यां शाखायाम् उपदिष्टम् - माध्यन्दिनीयशाखायाम्
- शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्त का अध्याय है - 34
- शुक्लयजुर्वेद में कितने अध्याय हैं? - 40 (चत्वारिंशत्)
- वाजसनेयिसहितायां कति अध्यायाः सन्ति - 40
- प्रधानतया वाजसनेयिसंहितायाः कति शाखाः सन्ति - 02
- शुक्लयजुःप्रातिशाख्ये कति अध्यायाः सन्ति - अष्ट
- कात्यायनस्य अनुक्रमणीग्रन्थे कति अध्यायाः सन्ति - पञ्च
- अध्वर्युगणे कति ऋत्विजो भवन्ति - चत्वारः
- वाजसनेयिसंहितायां प्रथमाध्याये कियन्तः मन्त्राः राराजन्ते - 31
- वर्तमान में शुक्लयजुर्वेद की कितनी शाखायें उपलब्ध हैं? - 2
- शुक्लयजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय है - ईशोपनिषत् (काण्व)
- '40 अध्याय' हैं - वाजसनेयिसंहिता में
- इष्टौ कति ऋत्विजो भवन्ति - चत्वारः
- शुक्लयजुर्वेदे रुद्राध्यायाः सन्ति - अष्ट
- शुक्लयजुर्वेदीय शिवसङ्कल्पसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति - षट् (6)
- माध्यन्दिनशाखायां कति अध्यायाः खिलरूपेण सन्ति - पञ्चदश
- वाजसनेयी शाखा के कितने भेद हैं - - पञ्चदश(15)
- माध्यन्दिनशतपथस्य कस्मिन् काण्डे अग्निरहस्यं वर्णितमस्ति - दशमे काण्डे
- मैत्रायणी शाखा से सम्बन्धित वेद है - कृष्णयजुर्वेद
- कृष्णयजुर्वेदस्य कति शाखाः सम्प्रति उपलभ्यन्ते - 02
- तैत्तिरीयशाखायां कति अष्टकाः खण्डाः वा सन्ति - 05
- तैत्तिरीयसंहितायां कति काण्डानि सन्ति - सप्त
- तैत्तिरीयसंहितायां कति प्रपाठकाः सन्ति - चतुश्चत्वारिंशत् (44)
- तैत्तिरीयप्रातिशाख्ये कत्यध्यायाः सन्ति - चतुर्विंशतिः(24)
- काण्वशाखा किस वेद की है - यजुर्वेद की
- काण्वसंहितायां कति मन्त्राः प्राप्यन्ते - 2086
- तैत्तिरीयसंहितायां कति अनुवाकाः स्वीक्रियन्ते - 631
- कृष्णयजुर्वेदे कति काण्डानि सन्ति - सप्त (7)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

- मैत्रायणी उपनिषद् कुल कितने अध्यायों में विभक्त है - 7 (सप्त)
- 'कठशाखा' सम्बन्धित है - यजुर्वेद से
- 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदे दृक्पथमुपयाति - शुक्लयजुर्वेदे
- मन्त्रब्राह्मणयोः सम्मिश्रणं वर्तते - कृष्णयजुर्वेदे
- कस्मात् कृष्णयजुर्वेदः कथ्यते - मन्त्रब्राह्मणयोः साङ्कर्यात्
- तित्तिररूपेण शिष्याः कं वेदं स्वीकृतवन्तः - कृष्णयजुर्वेदम्
- काण्वशाखा मुख्यतः कुत्र उपलभ्यते - महाराष्ट्रे
- कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा किस नाम से जानी जाती है - तैत्तिरीय शाखा
- कृष्णयजुर्वेद में है - मन्त्र और ब्राह्मण
- तैत्तिरीयसंहितायाः अध्यायानां प्रश्नानां वा अपरमभिधानं किमस्ति - प्रपाठकः
- कृष्णयजुर्वेदस्य का शाखा सम्प्रत्यपि सम्पूर्णतया न प्राप्यते - कठकापिष्ठलसंहिता
- ब्रह्मसम्प्रदायस्य प्रातिनिध्यं कः करोति - कृष्णयजुर्वेदः
- तैत्तिरीयसंहिता सम्बन्धित है - कृष्णयजुर्वेद से
- प्राजापत्यकाण्डं कस्यां संहितायां विद्यते - तैत्तिरीयसंहितायाम्
- कृष्णयजुर्वेदः केन सम्प्रदायेन सम्बध्यते - ब्रह्मसम्प्रदायेन
- मन्त्रब्राह्मणवाक्ययोर्मिश्रणं बाहुल्येन कुत्र प्राप्यते - कृष्णयजुर्वेदे
- काण्वसंहिता कस्मिन् वेदे अन्तर्भावो भवेत् - यजुसि
- मैत्रायणी-संहिता कस्य वेदस्य वर्तते - कृष्णयजुर्वेदस्य
- मन्त्रैः सह ब्राह्मणस्य नियोजनमस्ति, - कृष्णयजुर्वेदे
- कृष्णयजुर्वेदेन सह सम्बद्धमस्ति- - बौधायनगृह्यसूत्रम्
- तैत्तिरीयसंहितायाः तृतीयकाण्डस्य किं नाम - आग्नेयकाण्डम्
- तैत्तिरीयसंहितायाः नामान्तरमस्ति - कृष्णयजुर्वेदः
- कौन सी संहिता ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, धर्मसूत्रादि से सर्वाङ्गपूर्ण है - तैत्तिरीय-संहिता
- कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा किस नाम से जानी जाती है - तैत्तिरीय शाखा
- 'आपस्तम्बगृह्यसूत्र' से सम्बन्धित वेद - कृष्णयजुर्वेद
- 'मन्त्र तथा ब्राह्मण' की सम्मिलित संज्ञा क्या है - वेद
- वाजपेययाग का अनुष्ठान करने वाला होता है - सम्राट्
- अश्वमेध यज्ञ में अश्व के साथ सोती है - महिषी

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner